REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 8 | MAY - 2025

'धूल पौधों पर' में नारी जीवन की विडंबना

सुजाता फातरपेकर
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग अध्यक्ष, एम. एम. कला और विज्ञान महाविद्यालय,
सिरसी, कर्नाटक.

प्रस्तावना:

प्रसिद्ध कथाकार गोविंद मिश्र जी की यह अधुनातन कृति है। इसमें नारी जीवन की विडंबनापूर्ण स्थिति का चित्रण किया गया है। इक्कीसवीं सदी में भी हमारे समाज में नारी की स्थिति में कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ है। शिक्षित, आर्थिक रूप से सशक्त होकर भी पारिवारिक एवं सामाजिक मान्यताओं के बीच ग्रसित नारी अपने स्वतंत अस्तित्व के लिए छटपटाती रहती है। उसकी आशाएँ, सपने टूटकर चूर-चूर होती रही हैं। सच्चे प्रेम की तलाश में वह भटकती है, पर उसे कहीं भी पूर्ण प्रेम नहीं मिलता। घर से उदास होकर एकांगी जीवन की ओर उन्मुख होती रही है। नारी की इस विषम स्थिति का अंकन, उसकी मानसिक तुमुल का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। समसामयिक संदर्भों में होते घरेलू शोषण, टूटते रिश्ते, असुरक्षा का भाव आदि पर इसमें प्रकाश डाला जा रहा है। भारतीय समाज व्यवस्था में आज भी पुरुष एवं नारी के लिए दोहरी नीति अपनाई जा रही है। उनकी चपेट में नारी की स्थिति विषादनीय रही है, इसे समाजशास्त्री प्रेमप्रकाश के विचारों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रोफेसर प्रेमप्रकाश एक बड़ी संस्था के निदेशक हैं। वे कुलीन, संस्कारित, संभ्रांत, समृद्ध, ख्यातिप्राप्त, इज्जतदार, बौद्धिक, प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। एक एम्. फिल्. की छात्रा उनके विचारों से प्रभावित होकर उनकी आत्मीय बन जाती है। उसके उलझे जीवन को सुलझाने का कार्य इस बड़े समाजचिंतक के प्रयास सफल नहीं होते। जीवन ऐसा है कि उसे किसी दर्शन, शास्त्र या सिद्धांत से चलाया नहीं जा सकता। अनुभवी प्रज्ञावान, प्रेमप्रकाश भी उसका उद्धार करने का भरसक प्रयास करते है। पर संस्कार जीवन मल्य, परिस्थितियाँ एक व्यक्ति को ऐसे घेरे रहती हैं कि उनके बंधन को तोड़ना आसान नहीं। उनसे मुक्त होना चाहकर भी बार-बार मनुष्य उसमें उलझते रहता है। हर बार एक नये कारण को बताकर परिस्थिति से समझौता करने विवश होता है। इसे नायिका के चरित्र के माध्यम से गोविंद मिश्र जी प्रस्तुत कर रहे हैं।

एम्. फिल्. की छात्रा अपने विभाग में व्याख्यान देने प्रेमप्रकाश को आव्हानित करती है। छोटे कार्यक्रमों में भाग लेना अपनी हैसीयत के अनुकूल न मानकर इनकार करनेवाले प्रेम प्रकाश जी उसकी विश्वास भरी दलीलों से प्रभावित होकर स्वीकार कर लेते हैं। पहली मुलाकात में ही वे उस युवती से आकर्षित होते हैं । यह परिचय धीरे-धीरे उनके पारिवारिक मित्रता के रूप में बदल जाता है। वह युवती प्रेम प्रकाश के व्यक्तित्व से इतनी प्रभावित रहती है कि अपने घर की छोटी-मोटी समस्या को लिए वह उनकी सलाह मशविरा लेने जाती रहती है। प्रेम प्रकाश और उनकी पत्नी तथा माता भी उसकी उपस्थिति से अपने घर में बहार का अनुभव करते रहते हैं। प्रेम प्रकाश में पुरुष सहज प्रवृत्ति उस युवती के सौंदर्य से खींचता है। पर वह युवती उन्हें अपना हितैषी, मार्गदर्शक, गुरु, मित्र के रूप में स्वीकार कर स्वयं प्रेम प्रकाश पर हावी होती रही। वह अपने जीवन की भूत, भविष्य की चर्चा कर कदम-कदम पर उनके मार्गदर्शन की याचिका बनती है। एक भरे-पूरे परिवार की सदस्या होती हुई भी उसे अपने घर में वह प्रेम, विश्वास नहीं मिलता, उसका आहत हृदय आदर सम्मान की अभिलाषा में भटकता रहता है। प्रेम प्रकाश का उसके प्रति सहानुभूति, ममता उसे उनके निकट होने विवश करती है। आयु में अंतर होते हुए भी

विचारों में समानता होने के कारण उन दोनों में घनिष्टता बढ़ती है जो प्रेम का स्वरूप लेती है। अगर वहीं प्रेम उसे अपनेघर में मिला होता तो वह बाहर उसे क्यों तलाशती ?

प्रेम प्रकाश से वह समय-समय पर अपने गत जीवन का वर्णन करती रहती है। आरंभ से ही उसका जीवन दुख भरा था। उसकी माता ने एक विवाहित डाक्टर से प्रेम कर अपनी गृहस्थी के स्वप्न को पूर्ण किया था। बड़े ममत्व से अपने दोनों बच्चों को पालती रही। विधाता की वक्रदृष्टि से बच्चे अनाथ हो गए। पिता अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करते चुनमुन और उसके भाई को घर ले गये। यहाँ विमाता के क्रौर्य का शिकार उन्हें होना पडा। एक मात्र ममता स्नेह का आधार जो उनके जीवन में था, पिता के हार्ट एटैक से मृत्यु हुई तो छूट गयी। विमाता और सौतेले भाइयों से सताई जाती रही। बडा भाई भी मंडल कमीशन की हडताल में सौतेले भाइयों के षडयंत्र का शिकार बन जलकर मार दिया गया तो इस दुनिया में वह असहाय रही। जब वह इंटर में पढ़ रही थी उसी के मोहल्ले के युवक ने अपना प्रेम फिल्मी अंदाज में जाहिर किया। उससे प्रेम के बजाय नफरत इसके मन में जगी । अपने भाइयों से शिकायत की तो मामला पुलिस कचहरी तक पहुँच गया। सौतेली माँ अपने बच्चों के बचाव में इसे उसी युवक से विवाह करने मजबूर किया । विवाह से पहले उसने अपनी शिक्षा को जारी रखने की शर्त रखी, वादे के मुताबिक उसका पति उसे पढ़ता रहा तो वह अब एम्. फिल्. करती रही।

विवाह के बाद उसका प्रेमी पति उस पर पतित्व का अधिकार जताता रहा । उसे अपनी बपौती मान उसकी भावनाओं का कद्र न कर उसके शरीर को नोंचता रहा । अनचाही बहू होने के कारण सास ससुर के स्नेह से भी वह वंचित थी । उसका पति एक मामूली सा क्लर्क था। अपनी रुचि से ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किया था। गुरु जी से पत्नी सहित दीक्षा ली। अपने घर के मंदिर में धर्मगुरु बन समाज की सेवा का ढोंग कर धर्म व्यापार करता रहा। दिन भर धर्म कर्म की बातें करनेवाला रात में वह वहशी बन पत्नी को सताता तो उसका मन उसके प्रति जड बन गया। अपने गृहस्थ जीवन से वह ऊबने लगी। प्रेम, स्नेह, आत्मीयता की प्यास उसमें दिन ब दिन बढ़ने लगी। इसी बीच उसका परिचय प्रेम प्रकाश से हुआ तो वह उनके सुलझे व्यक्तित्व से आकर्षित हुई। २५-२६ वर्षीय युवती एक प्रौढ़ के साथ मानसिक प्रेम में बंद गयी। धीरे-धीरे उसे अपने पति के वहशीपन, ढोंगी प्रवृत्ति, हिंसक रूप से घृणा विद्रोह में बदलने लगा। प्रेम प्रकाश जी का सहयोग उसके मानसिक स्थैर्य को बढ़ाने लगा। वह अपने घर की ओर वैयक्तिक समस्याओं के लिए उनके सुझावों, सहायता की अपेक्षा करती रही। प्रेम प्रकाश भी उसके घर, नौकरी आदि के संबंध में सहायता करते रहे। प्रेम प्रकाश से वह प्रेम करने लगी तो उसकी आत्मा पति के साथ शारीरिक संबंध को भी पाप मानने लगी। उसका प्रेम प्रकाश से संबंध आत्मिक था, शारीरिक नहीं। वह उनके मन में अपने प्रति वही भाव जगाने में सफल रही। पर अपने पति में प्रेम जगाने में असफल ही रही ।

पत्नी के अभाव से उसका पति अपनी एक भक्तिन निशा के सहारे अपनी कामनाओं को पूर्ण करता रहा। पुरुष के अहम् को जो ठेस पहुँची भी बार-बार पत्नी को अपने वश करने उसे उकसाते रहते। इसीलिए वह पत्नी पर शारीरिक संबंध के लिए दबाव डालने लगा। उसका विरोध करने पर प्रेम प्रकाश और उसके संबंध में अफवाहें फैलकर उसे झुकाना चाहा। स्वयं उसके संस्था को पत्र लिखकर उसके अनैतिकता का प्रचार करने लगा। वह डर गई कि पति के इस षडयंत्र का परिणाम कहीं प्रेम प्रकाश के इज्जत को बरबाद न करे। पति से अलग होना चाहती है पर उसकी संतान का मोह उसे मुक्त होने नहीं देता। पुत्र सिद्धार्थ के मोह से वह पति से तलाक लेने की बात नहीं सोच पाती। दूसरे शहर में नौकरी मिलते ही वह नौकरी के बहाने उस दमघोंटू वातावरण से बाहर निकलती है।

हमारे समाज में अकेली नारी के लिए समस्याएं हल कदम बिछती रहतीं हैं। नए शहर में हर कार्य के लिए उसे पुरुष सहकर्मियों की सहायता लेनी पड़ी तो उसके अकेलेपन का फायदा वे भी उठाना चाहते हैं। प्रेम प्रकाश भी उसे हम उम्र साथी को तलाशने की सलाह देते हैं। पर प्रेम प्रकाश के अतिरिक्त किसी और की अपनाने के लिए वह तैयार नहीं। वह उस पौधे की तरह है जो बड़े वृक्ष की छत्रछाया में रहना चाहती है। अपने घर में वह आश्रय न मिला तो वह घर से बाहर कदम रखी। पुत्र का अभाव उसे दिन ब दिन घुलता रहा। छुट्टियों में घर लौटी तो पुत्र सिद्धार्थ की अवस्था देख उसे गलती करने का एहसास हुआ। माता के कर्तव्य से च्यूत होने का भाव उसे दुबारा घर लौटने विवश किया। उसके पति को भी पत्नी का घर में न होना अपने धर्म व्यापार के लिए हानिकारक था इसीलिए उसे वापस घर आने को कहा । पति पत्नी के बीच शारीरिक संबंध न होंगे इस शर्त पर वह घर लौटी। घर की सभी जिम्मेदारियाँ निभाती निर्लिप्त भाव से जीती रही। पति के अनैतिक संबंध को जानकर भी वह खुश थी कि उसे पति से मुक्ति मिली है। पर यह खुशी ज्यादा समय तक न रही। उसके पति में फिर से शरीराकांक्षा बढ़ती गयी। उसके विरोध करने पर वह मानसिक संतुलन खोता गया। पति-पत्नी के बीच का रहस्य दुनिया के सामने खुल गया तो वह अपमान से तिलमिलायी। पर अस्वस्थ पति पर आक्रोश न कर उसकी सेवा करती रही। उसके प्रति सहानुभूति जगने पर भी उसके मन में पति के लिए प्रेम उत्पन्न न हुआ। इन स्थितियों से ऊबकर फिर एक बार इस बंधन से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगी ।

प्रेम प्रकाश जी के पास पहुँच अपनी व्यथा जाहिर करती है। वे उसे सांत्वना देते हैं पर उसके लिए अपने परिवार को त्यागने तैयार नहीं होते। वे उसके माता, पिता, भाई, मित्र बन उसे मानसिक सहारा देंगे, वह इस घर को मायके समझ जब कभी आ सकती है। उसे अपने बेटे के जीवन को संवारने में प्रयत्नरत होने की सलाह देते हैं। वह उनकी सलाह के अनुसार अपना स्वार्थ भूलकर पुत्र के भविष्य को संवारने का निर्णय लेती है। शीघ्र उस घर से बेटे को लेकर जाने का निर्णय लेती है।

प्रस्तुत उपन्यास में आज के समय भी नारी पूर्ण स्वतंत्र नहीं। उसकी अस्मिता का संघर्ष निरंतर चलता रहा है। वैश्वीकरण के प्रभाव से भले ही भारतीय समाज में तेजी से बदलाव हो रहे हैं फिर भी नारी की स्थिति में कुछ खास परिवर्तन नहीं होते दिखते। शिक्षित, आधुनिक नारी भी घरेलू शोषण से पूर्णतः मुक्त नहीं। उसके अपने उसके व्यक्तित्व की पहचान नहीं कर पाते। स्वाभिमान से जीने के उसके प्रयास को बार-बार तोड़ने का निरंतर कार्य परिवार एवं समाज द्वारा होते रहता है। नारी का व्यक्तित्व जो एक सुंदर पौधे की तरह विकसित होना चाहिए था, उस पर शोषण रूपी धूल बार-बार जमकर उसे मुरझाने को बाध्य करते हैं । नारी के प्रति यह अन्याय कब समाप्त होगा? उसे एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में क्या कभी गौरव मिलेगा? यह प्रश्न आज भी बने हुए हैं।

संदर्भ :-

1) सृजन के आयाम - चंद्रकांत बांदिवडेकर (सं) , वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2007 , पृष्ठ संख्या 70
2) धूल पौधों पर, श्री गोविंद मिश्र, वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली संस्करण 2005 पृष्ठ संख्या.